दीप से दीप जले

प्रो. प्रेम सिंह

दीप से दीप
जलता है
जीवन को जीवन से
शिक्षा मिलती है।

अपनी बात

यह पुस्तक जगने और जगाने के लिए अलार्म है। विश्राम कुछ अधिक हो गया था। अत: सतर्कता और सावधानी की आवश्यकता है। पुस्तक में समाज को थोड़ा भी चेताया जा सके, तो सर्वोदय की कामना पल सकती है। कुछ छोटे-बड़े आयोजनों से कुछ हथकंडों वाले आंदोलनों से यदा-कदा हूंह छिड़ता रहा है। परिणाम बहुत बार बहुत अच्छे और बहुत बार बहुत निराशाजनक हुए हैं। विषमता की स्थिति में ऐसा होती ही है और होते भी रहना चाहिए।

माहौल जब जब बदलता है, तब-तब चिंता का भार कुछ लोगों के लिए अधिक हो जाता है। इसीलिए चिंता नहीं, चिंतन करने के लिए और चिंतन को बहस का रूप देने के लिए और बहस को प्रस्तावित करने के लिए और प्रस्तावों पर अमल करने के लिए जिन मुद्दों को मैंने उठाया है, उनके समाधान के लिए समाज से प्रार्थना है कि इस ओर कुछ अधिक ध्यान दिया जाए। यूँ कब नहीं कहा जाता और कब ध्यान नहीं दिया जाता। यदि ऐसा न होता, तो स्थिति जो आज है, वह भी न होती।

परंतु अब सहिष्णुता कुछ अधिक बाधित हो रही है। एक खलबली, एक बेचैनी बढ़ रही है। सभी कार्य जल्दबाजी में किए जा रहे है। ऐसा लगता है जैसे कहीं कोई आगे न निकल जाए और हम मुँह ताकते रह जाएं। यह सभी के साथ हो रहा है, परंतु कुछ लोग जो मिलकर चलने का आग्रह कर रहे हों, उन्हें साथ ले लिया जाएं, तो वे भी उतने ही सक्षम साबित होते हैं। यदि कुछ समझदारी से कार्य का बँटवारा कर लिया जाएं।

सृष्टि की संरचना बहुत ही वैविध्यपूर्ण है। विभिन्न प्रकार के प्रचलन है। अनूठे और अनोखे आचरण है। पेचीदा व्यवहार है। व्यवस्था बहुत अव्यवस्थित हैं। आज हर आदमी अपना

कान अपने हाथ से नहीं उमेठ सकता। दूसरे उसे उमेठ दें, यह सहा नहीं जा सकता। जो उमेठेगा, उसके हाथ कट जाने का भय है। इन विचित्र विडंबनाओं को पार तो करना ही होगा। जन्म से दृष्टिबाधित होने के नाते यह पुस्तक लिखकर मैंने अपना दर्द बांटने की एक छोटी-सी कोशिश की है। यदि इसे पढ़ कर किचिंद् मात्र भी दर्द साझा किया जाए तो हितकर होगा। साथ-साथ चलने और 'मिलकर चलो' का संदेश गुंजरित हो, यही कामना है।

इस पुस्तक को लिखने में मैंने अपनी पीएच॰डी॰ शोध छात्रा सुश्री राजकुमारी की आँखों से दृष्टि का काम लिया है। [illegible] स्नेहाशीष।

प्रो॰ (श्रीमती) प्रेम सिंह

हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली-110007

विवरणिका

	अपनी बात	
1	उपेक्षा	9
2	विकलांग वर्ग और वैयक्तिक चेतना	13
3	अपंग बच्चों के पुनर्स्थापन या पुनर्वास की समस्या	19
4	दृष्टिहीन वर्ग के लिए समेकित शिक्षा प्रणाली : एक विहंगम दृष्टिपात	28
5	दृष्टिहीन वर्ग की वैवाहिक समस्या	38
6	साहित्य तथा शिक्षा के क्षेत्र में दृष्टिहीन महिलाओं के लिए रोज़गार के अवसर	45
7	परिवर्तित मूल्य और अपंग महिलाएँ	49
8	अपनों का अपनों पर जुल्म क्यों?	56
9	अप्प दीपो भव:	64
10	साक्षर भारत के लिए आजीवन शिक्षा : भावी दृष्टिकोण	68
11	सकारात्मक सोच	78

उपेक्षा

उपेक्षा शब्द का शाब्दिक अर्थ है 'अवहेलना करना' अथवा 'नकार देना'। उपेक्षा शब्द अपेक्षा का विपरीतार्थक है। जहाँ एक ओर अपेक्षा करने से तात्पर्य किसी दूसरे व्यक्ति से एक निश्चित वस्तु अथवा व्यवहार की आकांक्षा करना है, वहीं उपेक्षा से तात्पर्य किसी को महत्त्व न देना और तिरस्कार भरी दृष्टि से देखना है। उपेक्षा शब्द अंग्रेज़ी के Ignore शब्द का समानार्थी है। इसी शब्द की अर्थध्वनियों को अपने भीतर समाहित किए हुए अन्य शब्द भी हैं। जैसे 'NEGLECT', 'NEGLIGENCE' इत्यादि। समाजशास्त्र ने उपेक्षित व्यक्तियों अथवा समुदायों का अध्ययन जिस शब्दावली के अंतर्गत किया है, उसे वे हाशिये के लोगों की संज्ञा देते है।

उपेक्षा एक मनोवैज्ञानिक उद्भावना है, जिसका संबंध मनुष्य के व्यवहार से है। जिसकी उपेक्षा की जाती है, वह सामान्य व्यवहार करने में अक्षम होता है। क्योंकि किसी अंग के अभाव के कारण दो व्यक्तियों के साथ चलने में वह अलग प्रतीत होता है। आँख या हाथ के विकृत हो जाने पर भी उसका व्यवहार भिन्न होता है। भिन्न होने के कारण वह उपेक्षणीय हो जाता है। उपेक्षा करने वाला व्यक्ति अहमन्यता के कारण दूसरे व्यक्ति में अभाव देखता है। इसलिए नकारता है, अवहेलना करता है, तिरस्कार करता है। इसके साथ-साथ असमानता, भेदभाव, अन्याय, दमन, शोषण, उत्पीड़न इत्यादि जो भी कर सकता है, वह करता है। जैसा व्यवहार धनी व्यक्ति निर्धन के साथ करता है, मालिक नौकर के साथ करता है, सक्षम अक्षम के साथ करता है।

सामाजिक एवं मानव व्यवहारवादी विज्ञान के अंतर्गत इसकी एक परिभाषा यह दी गई है कि "विभिन्न व्यक्तियों, समुदायों, वर्गों का सामाजिक और आर्थिक संसाधनों से